

चैतन्या लहरी

हिन्दी

मार्च-अप्रैल २०१३



चित्त ...४



सुषुम्ना नाडी
श्री महालक्ष्मी ...१९



इस अंक में

सूक्ष्म चक्र एवं उनमें
स्थापित अन्तर्जात गुण
...२०



स्वाधिष्ठान चक्र ...२४
श्री ब्रह्मदेव सरस्वती ... ३०
श्री ब्रह्मदेव ... ३४





आजकल के समाज में जो हम घुमते हैं और नानाविध उपकरणों के कारण हमारा जो चित्त बाहर की ओर हमेशा रहता है। बाह्य की चीजें हमें दिखाई देती हैं। इन सब चीजों से हम कुछ प्रभावित होते भी हैं। और कुछ ये भी बात है कि, हमारे दिमाग में भर दिया गया है कि ये चीजें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इस वजह से जो चीजें बिलकुल ही महत्वपूर्ण नहीं उधर हमारा चित्त पहले जाता है और जो चीजें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं वहाँ हमारा चित्त नहीं जाता है। इसलिये हम ऐसी चीजों को इकट्ठा कर लेते हैं जो बिलकुल बेकार हैं।

चिंत

२४/३/१९७९



आप लोग सब सहजयोग में आये हैं। कुछ लोग पहले से आये हैं, बहुत सालों से और कोई लोग नये हैं। धीरे-धीरे सहजयोग में संख्या बढ़ने वाली है इसमें कोई शक नहीं है और सत्य जो है वो धीरे-धीरे ही प्रस्थापित होता है।

सत्य की पकड़ धीरे-धीरे होती है। आपके यहाँ ऐसे लोग हैं जो आठ-आठ, नौ-नौ महिनों तक सहजयोग में आते रहे और उसके बाद पार हुए। सत्य को पाने के लिये हमारे अन्दर पहले तो गहराई होनी चाहिए। पर सबसे बड़ी चीज़ है हमारे अन्दर सफाई होनी चाहिए। अब अनेक गुरुओं के बीच में जाकर के हमारा चित्त जो है वो बुरी तरह से विक्षिप्त हो जाता है। दूसरा, आजकल के समाज में जो हम घुमते हैं और नानाविध उपकरणों के कारण हमारा जो चित्त बाहर की ओर हमेशा रहता है। बाह्य की चीज़ें हमें दिखाई देती हैं। इन सब चीज़ों से हम कुछ प्रभावित होते भी हैं। और कुछ ये भी बात है कि, हमारे दिमाग में भर दिया गया है कि ये चीज़ें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इस वजह से जो चीज़ें बिलकुल ही महत्वपूर्ण नहीं उधर हमारा चित्त पहले जाता है और जो चीज़ें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं वहाँ हमारा चित्त नहीं जाता है। इसलिये हम ऐसी चीज़ों को इकट्ठा कर लेते हैं जो बिलकुल बेकार हैं। जिसको कि अंग्रेजी में जंक कहते हैं, मराठी में 'अडगळ' कहते हैं। इस तरह का हमारा चित्त जो है वो बेकार की चीज़ों से बोझिल हो जाता है। उसका बोझा चित्त उठा नहीं पाता। थक जाते हैं हम! जब हम आपस में भी बातचीत करते हैं, ऐसे समाज में तो लोग एक दूसरे से ज़्यादा देर तक बात नहीं कर पाते क्योंकि उनका चित्त इतना बोझिल होता है कि वो थक जाते हैं, वो एक-दूसरे से बात करते वक्त भी, जब तक कोई किताब ना पढ़ें या कोई सिनेमा ना देखें या कोई तिसरी चीज़ ना हो तब तक वो दस मिनट भी साथ नहीं बैठ सकते। इस चित्त को जितना आप शुद्ध रखेंगे उतना ही आपको आनंद आयेगा। अब चित्त की शुद्धता रखते वक्त ये याद रखना है कि इसी चित्त से ही हमें परमात्मा को जानना है। एक बार परमात्मा को जानने के बाद बाकी जो कुछ जानना है वो बहुत कुछ सरल हो जाता है। क्योंकि आप किसी भी चीज़ को जब सूत्र से पकड़ते हैं तो वो बहुत दूर तक और सूक्ष्म आप पकड़ते हैं। इसलिये हमेशा अपने चित्त की ओर ध्यान रखें कि अपना चित्त कहाँ जाता है। जितना चित्त समाहित हो जाये, समर्पित हो जाये उतना ही वो चित्त शुद्ध होते जाता है। ये समझ लीजिए कि जितना आप गंगा में डूब जाये उतना ही आप पवित्र होते हैं।

अब इस पर बहुत बड़ी चर्चा ये हो जाती है कि, 'माँ किस तरह से हम समर्पण करें अपने को?' इसका एक तरीका आप लोगों ने अभी देखा है जो हम लोगों ने आजमाया है। जैसे कि आप अभी देख चुके हैं कि एक स्त्री है, उसने अपने को गायत्री में समर्पित कर दिया था, या श्रीराम को मानती हैं। अपने देश में विशेष कर के ऐसा रिवाज है कि हम कोई न कोई कुलदैवत रखते हैं या कुलस्वामिनी होती है। उसको हम पूरी तरह से मानते हैं और अपनी जितनी भी चित्त प्रवृत्ति है उसमें स्थित कर देते हैं। एक तरह से हम अपने को इसमें समर्पित रखते हैं, लेकिन उस समर्पण में हम कुछ पा नहीं पाते। उससे गहराई हमारे अन्दर बढ़ जाती है जरूर, लेकिन उस गहराई में हम कुछ पकड़ नहीं पाते। इसी प्रकार समझें कि एक अगर कुंभ है या घड़ा है, उसमें गहराई बहुत है, लेकिन उसका मुँह गंगा की ओर नहीं है दूसरी ओर है।

लेकिन गहराई बनती जा रही है। लेकिन उस ओर से गंगा उसके अन्दर बहने वाली नहीं है। वो जो गहराई जिसके कारण बनी है उसको अगर गंगा की ओर मोड़ दीजिए तो उसमें गंगा फौरन भर आयेगी। अपने देश में इसका बड़ा भारी लाभ होता है। इसलिये आपने देखा कि, जिसने भी, समझ लीजिए श्रीराम को माना या किसी भी ऐसे दैवी अवतार को माना है और उसमें अपने को समर्पित कर लिया है, वो अगर इतना ही सवाल पूछ ले कि, 'क्या माताजी, आप वो शक्ति हैं, तो फौरन उसके अन्दर गंगा बहना शुरू हो जाएगी।' कितना आसान तरीका सहजयोग का है बताईये!

इससे दो लाभ हैं। एक तो ये है कि आज तक की जितनी आपकी तपस्या है वो व्यर्थ नहीं गयी और दूसरा लाभ ये भी हुआ है कि आपने हमें भी पहचान लिया अनायास। जब पहले बहुत से अवतार संसार में आये थे, तो उनके साथ जितने उपद्रव हुए हैं वो आप जानते ही हैं और किस कदर लोगों ने उनको सताया है, ये भी आप जानते हैं। अब इस अवतार में ये सोचा गया कि मनुष्य को किस तरह से पहचान कराई जाए? वो किस तरह से जाने कि ये अवतार हैं? क्योंकि मनुष्य बहुत ज़्यादा अहंकारी है। वो किसी को अवतार मानने में तैयार नहीं। जब अवतार कार्य खतम हो जाता है तब वो सोचता है, 'अरे, क्या गलती हो गयी?' क्योंकि वो जब मर जाता है तो उसे ज्ञात होता है। तब वो रोता है कि, 'अरे, ये मैंने क्या कर दिया?'

एक साहब थे यहाँ। उनका मैं ट्रिटमेंट करने गयी। बहुत बीमार रहते थे। तो वो मुझे बताने लगे, 'माँ, मुझे एक अजीब सा सपना आया कि मैं जब सो रहा था दूसरे कमरे में और मेरे घर वाले सब उसी कमरे में मेरे साथ थे। और आप एक दूसरे कमरे में थीं जहाँ आपकी पूजा हो रही थी, अर्चना हो रही थी।' ये जिनको सपना आया था, उनका नाम था माणिकलाल। 'और मैं उसमें शामिल नहीं हो पा रहा था। और मैं छटपटा रहा था। मैं उठ नहीं पा रहा था। मैं जा नहीं पा रहा था और मेरे रिश्तेदार भी मुझी को देख रहे थे और आपको नहीं जान रहे थे। मैं चाह रहा था कि उनसे कहूँ कि जाओ, माँ की पूजा करो।' असल में वो अपनी स्थिति मृत्यू के बाद की देख रहे थे। अब उनकी मृत्यू भी हो चुकी थी। तब मैं उनसे क्या कहती कि, 'तुम अब मरने वाले हो! उस वक्त तो ऐसा लगेगा कि अभी तुम समर्पित हो जाओ।' ये मृत्यू के बाद की छटपटाहट वो देख रहे थे उस वक्त जब वो मर रहे थे तब और उन्होंने दो-तीन बार ये सपना बताया कि 'माँ, इस सपने का क्या अर्थ हो सकता है। मुझे बार-बार यही सपना आता है और जब भी मैं सोता हूँ मुझे ये लगता है कि छटपटाहट है कि माँ की पूजा हो रही है। सब लोग खूब जयघोष गा रहे हैं और मैं बिलकुल उसमें अछूता रह गया हूँ। मैं उसमें शामिल नहीं हो पा रहा हूँ। और मैं छटपटा रहा हूँ और मेरे घर वाले भी उस में सब आये हैं। वो मेरे लिए रो रहे हैं। मेरे पीछे में बैठे हुए हैं। मेरी फोटो लगाए हुए हैं और आपकी ओर नहीं जा रहे हैं और मैं चाह रहा हूँ कि मैं ढकेलूँ उनको उधर!' ये स्वप्न उन्होंने अपनी बीबी-बच्चे उनके सबके सामने कहा था और अगर मैं अभी उनको समझाऊँ तो भी उनके समझ में नहीं आने वाला। सो इस वजह से अपने देश में एक बड़ी भारी ये हमारे लिए सुविधा हो गई है इस देश में, और देश में नहीं क्योंकि हम किसी ना किसी दैवत को मानते जरूर हैं। अब हरे रामा हरे कृष्णा वाले भी अगर

अपनी गगरी हमारे ओर कर दे और हमसे पूछे कि, 'क्या हरे रामा हरे कृष्णा आप ही हैं?' जिनको हम बजते रहे तो वो भी, उनका भी विशुद्धि चक्र साफ हो जाएगा। और उनके भी गले भर आएं। आपने ये सब बातें अनुभव की होंगी। कोई नयी बात मैं आपसे नहीं बता रही हूँ। आप लोग भी जब किसी को रियलाइज़ेशन दे तो पहले ही उनसे कह दीजिए कि आप देखिए कि क्या यह वही शक्ती है, जिसको आज तक आप मानते रहे? ये अपने देश में बहुत ज्यादा सादगी होता है, विदेश में कम क्योंकि वहाँ तो वो किसी को भी नहीं मानते। अपने सिवा दुनिया में किसीको नहीं मानते अधिकतर लोग वहाँ पर। वहाँ की तो बात ही करना बेकार है। क्योंकि वहाँ तो इस कदर आदमी अलग-अलग हो गया है कि एक आदमी ये नहीं जानता कि अपना बाप अभी तक मरा है कि जिंदा है। ऐसे भी वहाँ मैंने बहुत से लोग देखे हैं। तो इन लोगों की बात ही छोड़ दीजिए। पर हमारे देश में ये बड़ा ही आसान है। जब हम किसी भी इन्सान से ये जान लें कि वो कौनसे भगवान को मानते हैं, तो मेहेज उससे अगर आप इतना कह दीजिये कि, 'क्या ये वही चीज़ है हमारे सामने या नहीं?' मतलब ये कि कोई भी जो सही गुरु हो उनकी बात कर रही हूँ मैं। कोई अगर सही अवतार हैं, उनकी बात कर रही हूँ मैं। हर एक अजीब-सजीब लोगों की बात नहीं कर रही हूँ मैं। तो उसके उत्तर में उनको वाइब्रेशन्स आ जाएंगे। तीन मर्तबा में ही अब वाइब्रेशन्स आने चाहिए, लेकिन कुछ-कुछ लोग अजीब भी होते हैं।

जैसे कि एक आयी थी देवीजी और कहने लगी कि मैं रेणुका देवी को मानती हूँ। अब रेणुका देवी का कोई अवतरण नहीं मानना चाहिए, खास कर के और इस तरह की विक्षिप्त भी बहुत सारी चीज़ें मान लेते हैं। तो जो साधारण तरीके से जिनको हम अवतार मानते हैं। उनको मानते होंगे उनके लिए आप गर इस तरह से पूछें कि क्या ये वही है तो ये कार्य एकदम हो जाएगा। और जब उनका चित्त ये जान जाएगा कि ये वही हैं। धीरे-धीरे दोनों में सामंजस्य होता जाएगा और बात उनकी समझ में आ जाएगी। इसमें कोई भी हिचकिचाने की या डरने की बात नहीं। आज तक एक मायने में आप जानते ही हैं कि हम कौन हैं? और जब भी ऐसे ही कोई आपसे सवाल पूछे तो हमने कह भी दिया खुले आम कि हम कौन हैं। हमें इसका डर नहीं लगता क्योंकि पूरे कॉन्फिडन्स से हमने हमेशा कहा है कि हाँ ये बात सही है अगर आप हमसे पूछे तो हमने कह दिया। कोई उसमें डरने की बात नहीं है। लेकिन हम तो सिर्फ इसलिये इस बात को समझ के कह रहे थे कि लोगों में इतना ज्यादा अहंकार है कि उनसे ये बात जैसे ही पता हो जाती है वो बस डंडा लेकर मारने को दौड़ जाते हैं। उनके लिये सबसे बड़ी बात दुःखदायी ये होती है कि संसार में कोई भगवान के अवतार में आया हुआ है। क्योंकि उनको लगता है कि सब हमारा जैसे कुछ छीन गया हो। सारा संसार उनको लगता है कि उनसे किसीने पूरी तरह से अपने हाथ में ले लिया और उनका अब कुछ नहीं रहा और वो खतम हो गये। क्योंकि वो अपने को अवतार समझ बैठे हैं। मुश्किल तो ये है इसलिये जैसे ही वो सुनते हैं कि ऐसी-ऐसी बात है तो उनकी शंकाए शुरू हो जाती है। लेकिन मरे हुए देवताओं को, जो कि हजार साल पहले मर चुके हैं। उन्हीं को वो पूजेंगे। उसमें उनको वो कोई भी नहीं है अहंकार, लेकिन अगर कहा जाए कि आप देखिये कि जिसको पूजा है आज तक वही ये है कि नहीं देखो।

अब कश्मीर में गायत्री मंत्र का बहुत ज्यादा प्रचार है। अब बहुत लोग गायत्री, जितने भी ब्राह्मण हैं वो गायत्री करते हैं और उन लोगों को सब को दुनिया भर की तकलीफें हैं। बहुत तकलीफें हैं। अब उनमें से कुछ तो ऐसे हैं कि वो कहते हैं कि हम तो गायत्री छोड़ ही नहीं सकते हैं। और कुछ लोग ऐसे हैं कि जो कहते हैं कि गायत्री से हमें कोई लाभ नहीं हुआ। माँ, हमने इतनी गायत्री करी कोई फायदा नहीं हुआ और दूषण देते हैं गायत्री को कि इतना हमने गायत्री करने से भी हमें कोई फायदा नहीं हुआ। हमें ये बीमारी, वो बीमारी है, ये तकलीफें हैं। उस वक्त अगर आप उनसे कहें कि, 'अच्छा, माँ से पूछो कि, माँ, क्या आप गायत्री देवी हैं?' तो पाँच मिनट के अन्दर वो पार हो जाते हैं और बिलकुल सारी मशीन फिटफिट चलने लग जाती है। खट खट खट खट, याने ये सोचे कि कोई 'प्लग' आपने गलत लगा दिया है तो मशीन नहीं चलती। वही 'प्लग' ठीक लग गया तो मशीन खटखट चलने लग जाती है। इस तरह से आपको लोगों को समझाना पड़ता है। कोई सरल काम नहीं है अवतार लेना! बहुत ही कठिन कार्य है। और मूर्खों के बीच में जन्म लेना तो उससे भी कठिन है क्योंकि आपने कोई भी सूझबूझ की बात कही तो मनुष्य का एक और तरिका है कि उसका ब्रॅण्ड मार दो कोई भी। जैसे कि वो आपको कह देंगे कि आप जो हैं, आप डंडा मार देना किसी को भी और हो गया और आप बैठ गये। अब आप क्या करें? अगर आप उनसे कहिये कि आप बढ़िया आदमी हैं, आप गोबर खाते हैं तो कोई हर्ज नहीं है, आप खूब खाओ, तो आप बड़े अच्छे आदमी बन जाएंगे। लेकिन अगर आपने कहा कि ये गलत है। इसे नहीं करना चाहिए। हर एक गुरु ने कहा है। आज तक जो असली गुरु है उसने हमेशा कहा है। नकली गुरु क्यों कहने चले! उनको तो आपके पैसे से मतलब है। वो तो कहते हैं कि जो भी करना है करो। हमारा पर्स हमको दे दो अपना। तो उनको तो ये प्रॉब्लेम है नहीं। ये तो बात तब खड़ी होती है जब सच्चा गुरु खड़ा होता है तो वो बताता है कि नहीं ये नहीं, ये गलत है, ये गलत है, ये नहीं करना है और ये करना है, ये सही है, ये गलत आदमी है, ये सही आदमी है। इसीका जो नीर-क्षीर विवेक जानता है वही तो ये सब बताएगा ना और वो जब बोलने लग जाता है तो आदमी ने अपने तरीके बना रखे हैं तो उसको ब्रॅण्ड मार दो कि ये है, वो वो है। वो फलाना है, वो ठिकाना है। हो गया काम खतम! अब वो आदमी, ये तो हम इनके भले के लिये बता रहे हैं। अपने बाप के लिये भी आजकल बनाते हैं ब्रॅण्ड! अपने माँ के लिए भी बनाते हैं, अपने टीचर्स के लिये भी ब्रॅण्ड बनाते हैं। नाम दे दिया उनका। नामकरण, संस्करण कर दिया है उनका क्योंकि आपके समझ में ये बात ही नहीं आयी इसलिये आपने कह दिया। ये आजकल का मॉडर्न तरीका है। पुराने जमाने में उलटे लोग गुरुओं के पास बैठे रहते थे घंटों। ये सुनने के लिये कि वो हमें बताए कि हमारा क्या दोष है? कान पकड़ के गुरु के सामने बैठे रहते थे और अभी तक भी जो सच्चे गुरु लोग हैं जो सबके उल्लू सीधे करते थे और उनके तरिके इतने कठिन होते हैं कि उनका वर्णन ही नहीं कर सकते।

मैंने आपसे बताया था कि एक साहब की कैसे टांगे तोड़ दी थी और वो गले में डाल कर भेजा था मेरे पास। इस तरह से एक आज्ञा चक्र निकालने के लिये किस तरह से उन्होंने आफत मचायी थी। लेकिन फिर एक बात तो गुरु की हुई कि वो मनुष्य ही हुआ फिर कोई अवतार हुआ। उसके पीछे तो पहले से ही

डंडे लेकर लोग खड़े रहते थे कि अवतार हुआ माने क्या? उसके घर में ही भूत घूसा देंगे जैसे कि रामचंद्र के जमाने में मंथरा जैसे एक दासी की बात, एक दासी की बात उन्होंने सुन ली। कैसे? दासी की भी कोई बात सुनने की होती है? कैकयी जैसी समझदार औरत ने एक दासी की बात सुन ली। उसके पीछे में श्रीराम को जंगल जाना पड़ा। सीताजी को नंगे पाँव चलना पड़ा। कितनी दुःख, कितनी विपत्ती, लेकिन वो भी एक कार्य था चलो हो गया। कृष्ण के जमाने में भी आप जानते हैं कि कृष्ण किसी को भी गीता नहीं बताते सिवाय एक अर्जुन के, ऐसे थोड़े ही है कि पचासों को बिठाकर के बता रहा है वो। अगर कृष्ण किसीसे कहते कि, 'सर्व धर्माणाम् परित्यज्य, मामेकम् शरणं ब्रज' तो उनको ब्रॅण्ड मार देते वो लोग एक। वो तो उनके मरने के बाद सब लोग गीता-वीता पढ़ रहे हैं। जैसे कि ईसामसीह ने कह दिया है कि, 'I am the light, I am the path' बस उसको एक ब्रॅण्ड मार देते हैं। इगोईस्टिकल या और कुछ भी कुछ कह देते हैं।

तो अवतार कार्य बहुत ही कठिन कार्य है। इससे कठिन कार्य और कुछ भी नहीं हो सकता है। एक तो आप भगवान हैं। समझ लीजिए अगर आप भगवान हैं तो आप संसार में आए हैं तो मनुष्य के जैसे रहना बहुत ही मुश्किल है क्योंकि मनुष्य की आदतें आपमें नहीं होती। मनुष्य को समझना तो उससे भी महाकठिन है। बहुत ही कठिन है। समझ लीजिए, कि आप इन्सान हैं। अब आप कुत्ते को कैसे समझेंगे? बताइये आप! आसान है क्या, नहीं। ये मैं एक आपसे पूछती हूँ। बहुत मुश्किल काम है। फिर आप किसी कीड़े को अगर समझे कि उसकी क्या आदत है कि वो कौन गन्दगी में रहता है। किधर घुसता है? क्या-क्या गंदगी करता है। आप में तो ऐसे घीन चढ़ती। इसलिये अवतार लेना कोई सरल बात नहीं है और कोई मनुष्य जो कहता है कि मैं अवतार ले रहा हूँ। उसको बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती है। पर झूट-मूट का कहना कि, 'मैं अवतार हूँ', ये तो बहुत ही आसान तरीका है। इससे तो कोई और आसान तरीका है ही नहीं क्योंकि जिस आदमी को असली बिज़निस करना पड़ता है उसको पता चलता है कि कितना मुश्किल है बिज़निस चलाना। अगर किसी को ऐसे ही फेक बिज़निस करना हो, समझ लीजिये कि आए और उन्होंने कह दिया कि, 'मेरा बड़ा भारी बिज़निस है। मुझे इतना रूपया चाहिए।' उसके लिये गवर्मेंट को बेवकूफ बनाया। प्राइम मिनिस्टर को बेवकूफ बनाया। उनसे रूपया लिया। दूसरे से रूपया लिया, रूपया लगा दिया। कहाँ लगाया? किसी से पूछा नहीं, फिर पैसे नहीं तो भाग गया अमेरिका। बहुत ही आसान चीज़ है। बेवकूफ बनाना तो बहुत ही आसान चीज़ है। पर असल में बिज़निस चलाना कितना कठिन है!

नकल में भगवान बनना तो बहुत ही अच्छी चीज़ है और बहुत ही सरल चीज़ है। अच्छी माने सरल कि आप बन गये भगवान। हाँ भाई, आप बन गये भगवान। चलो, फिर क्या! हमको चाँदी की थाली चाहिये खाने को। नहाने के लिये सोने की बाल्टी चाहिये। बैठने के लिये हमें संगेमरमर, रहने के लिए हमें महल चाहिये। चलने के लिये हमको मर्सिडीज़ चाहिए। ठीक है। आपको सब सप्लाय करना पड़ेगा क्योंकि वो है भगवान और जो असल भगवान होयेगा वो तो ये सोचेगा कि, 'मैं इनके जैसे बन जाऊँ। सर्वसामान्य बन जाऊँ और वो दिन भूल जाऊँ कि जब वाकई मैं महलों में रहता था और जब मैं हर

तरह से ऐषोराम में हूँ। अन्दर से भी आनंद में हूँ, बाहर से भी आनंद में हूँ। वो सब चीज़ मैं भूल जाऊँ और यहाँ आकर के और मेहनत करूँ दो हाथों से, घूमू, धूल खाऊँ, लोगों की सेवा करूँ, उनको उठाऊँ, उनके बखेडे उठाऊँ, उनके अन्दर जागृति करूँ,' कृष्ण के लिये कितना कठिन था। आप देख सकते हैं कि मथुरा से बिचारे वृंदावन आये, कैसी हालत में आये! वहाँ किस तरह से ग्वाल-बाल कर के रहे। कितनी विपत्तियाँ उठायी। उनको मारने के लिये राक्षस आते थे। उन्होंने अपनी संहार शक्ति कैसी इस्तेमाल करी। किस तरह से उनको नाग, जो डोह में नाग रहता था, कालिया, उसको किस तरह से उन्होंने मर्दन किया। ये सब आप लोग जानते हैं उनका जीवन।

राम का भी जीवन आप जानते हैं। ईसामसीह का जीवन आप जानते हैं। मोहम्मद साहब का भी जीवन आप जानते हैं। झोराष्टर का जीवन आप जानते हैं। कितनी उन लोगों को आफतें उठानी पड़ी और जीवन में कितने मुश्किल से उन्हें जीना पड़ा। कैसे-कैसे लोगों ने उनके साथ आफतें ढाई! उनको किस तरह से परेशान किया। फर्क क्या है दोनों में, सबसे बड़ा फर्क ये है कि एक इन्सान जो कि झूठा है वो आराम उठाता है। सबको उल्लू बनाता है। अपनी जेबें भरता है और कोई मज़ाल नहीं, कोई उसके खिलाफ कुछ कहे और जो सच्चा होता है वो हमेशा सताया जाता है। तकलीफ दी जाती है। वो खुद भी बहुत अपने जीवन को रगड़ता है, चन्दन के जैसे। और तो भी उसकी अंग-अंग से, प्रत्यंग से सुगंध आती है। झूठा आदमी जो होता है वो कहता है कि मैं तुम्हें ये दे दूँगा। ये तुम्हारा हो जाएगा भला, अगर कोई जाये तो कहेगा कि, 'तुम्हारा करम है तो मैं क्या करूँ?' और आदमी इसको बड़ा संतोष में रहता है कि ये तो हमारे करम ही नहीं थे तो क्या करेंगे हमारे गुरु! सिर्फ एक चीज़ हमने नहीं की कि जरा रूपया कम दिया। कुछ श्रद्धा और हो जाए तो हो सकता है बन जाएगा काम। तो फिर 'श्रद्धा स्वरूपेण' कुछ ना कुछ उनके पास पहुँच जाता है मामला, झूठ चलता ही रहेगा, झूठ चलता ही रहेगा एक तरफ, जब तक वो आदमी बिलकुल बेवकूफ हो करके एकदम बरबाद नहीं हो जाए तब तक वो उस झूठ में चलता ही रहेगा।

और सच, सच की मेहनत गहरी होती है, रुपये-पैसे से खतम नहीं होने वाली। रूपया-पैसा तो कोई चीज़ होती ही नहीं सच के सामने। सच में आपके हृदय की बात होती है। उसकी मेहनत असली होती है। उसके लिये मनुष्य तैयार नहीं है, ये तो बहुत ही आसान है। जैसे बाज़ार में जाते हैं वैसे आप खरीद रहे हैं, एक-दो-चार, इसमें कौनसी कठिनाई है। जितना पैसा हो उसके हिसाब से आप जो भी चाहे खरीदते ही रहते हैं चीज़। वैसे ही आपने गुरु भी खरीद लिये तो क्या उसमें मुश्किल हुई। पर जब ये हुआ कि नहीं ये तो उलटे महाराज दिखते हैं। ये तो कहते हैं भाई, कि तुमको शराब छोड़नी पड़ेगी, तुमको सिगरेट छोड़नी पड़ेगी, तुमको तम्बाखू छोड़नी पड़ेगी, कायदे से तुमको रहना पड़ेगा। तुम अपनी बीवी को छोड़ के भाग नहीं सकते। अभी एक साहब आये थे दिल्ली में और मुझे बताने लग गये कि, 'साहब मेरा मेरी बीवी से पटता नहीं। मैं चाह रहा हूँ कि मैं एक दूसरी औरत से प्यार करता हूँ।' मैंने कहा, 'साहब, मेरे पास ये सब बातें मत करें आप मेहरबानी से।' तो उनके लिये मैं 'फिर हो गयी दखियानुसी बुढ़िया औरत' फिर हो गया

मेरे उपर ब्रॅण्ड मार दिया उन्होंने और वो अपने सत्कर्म में लग गये। सत्कर्म तो करो, करना बहुत ही कठिन काम है फिर सवाल ये आता है कि ये तो ठीक है कि आपने उनकी बात नहीं मानी और इसलिये आप नाराज़ हो गये। लेकिन जनाब आपने किसका भला किया है आजतक? आपने किसको लाभ पहुँचाया है आजतक? आपने किसकी आफ़तें उठाई है आजतक? अगर किसी भी गुरु के पास जाके पूछें तो वो आपको बता देंगे कि ये सच्चे हैं कि झूठे हैं, एक ही पाँइट पर कि वो आपकी चिन्ता करते हैं कि आपके पर्स की चिन्ता करते हैं। आपकी चिन्ता करते हैं कि आपकी और जो कुछ भी चीज़े हैं उनकी ओर उनकी नज़र है। इसीसे आदमी सच और झूठ को पहचान लेता है।

अब सहजयोगियों के सामने बड़ा प्रश्न है, कि ये कहे कि नहीं कहे कि, 'माँ आदिशक्ति हैं।' अब ये तो हैं ही! इसमें कोई झूठ बात नहीं! चाहे बुरा मानो, चाहे भला मानो बात तो सही है। तो उलटे सवाल ऐसा पूछना चाहिये कि, 'साहब हमने अपने आँख से कुण्डलिनी को उठते देखा। उसका स्पंदन देखा और तो कोई तुमने देखा है क्या? पूछ लो कहीं देखा है।' हम भी जब कुण्डलिनी को उठाते हैं तो ऐसा ही स्पंदन होता है। जैसे माँ के चरणों में होता है। पर तुमने देखा है क्या कुण्डलिनी का स्पंदन? हमने देखा अपनी आँखों से, हजारों का देखा है। माँ के पैर पे कुण्डलिनी उठके दौड़ती है और देवी महात्म्य में लिखा हुआ है। ललिता सहस्रनाम में लिखा हुआ है, कि माँ के ही चरणों में कुण्डलिनी चलती है और जो हज़ारों कुण्डलिनियों को उठाती है वो कोई ना कोई चीज़ हुये बगैर तो होने ही नहीं वाला है काम। इस तरह की जब आप उनसे बात कहेंगे कि भाई, आखिर विश्वास नहीं करो तो कैसे नहीं करोगे?

अब एक और साहब, सरदार जी लोगों का किस्सा बताते हैं कि एक साहब गये कहीं, तो उन्होंने सूरज देखा और पूछा, 'भाई, ये सूरज है या चाँद है समझ में नहीं आता?' तो उसे जवाब मिला कि, 'पता नहीं कि सूरज है या चाँद है।' तो दूसरे आये, उनसे भी पूछा, 'भाई ये सूरज है कि चाँद है बताओ।' हम दोनों में झगड़ा हो रहा है। तो उसने कहा कि, 'देखो भाई, मैं परदेसी हूँ मुझे पता नहीं।'

उसी प्रकार जिनकी खोपड़ी में ये घुस नहीं सकता उनको घुसाने के लिये आपको अब ये कहना चाहिये कि, 'अच्छा भाई, एक ही चीज़ करो तुम, हम तो समझ गये, अब हमसे तो उनको मना ही नहीं किया जा सकता क्योंकि हमने तो अपनी आँख से देखा, हमारे अन्दर भी घटित हुआ। अपनी आँखों से देखा है कुण्डलिनी को हजार बार उठते हुए। तो क्या अब इस सत्य को हम भूला दे। हम कैसे भुलायें इस बात को। अच्छा, अगर तुमको विश्वास नहीं होता तो तुम माताजी के फोटो पर ये सवाल पूछ लो। जो भी तुम्हारी बेटी होगी, उनको पूछ लो तुम। पूछ के देखो, कि हैं क्या माताजी आदिशक्ति? चलो, पूछ के तो देखो।' और ये व्यवस्था मैंने कर रखी है कि फोटो पे जवाब आएगा। देखिये क्या कमाल कर रखा है। अब फोटो भी जो चीज़ है वो भी एक प्रपोज़रन है। वो प्रपोज़रन रखना पड़ता है। बाँडी का भी, सब चीज़ का रखना पड़ता है। अगर वो प्रपोज़रन ही नहीं रहेगा तो को-एफिशियन्स नहीं जाने वाला है उसका। गधे लोगों को थोड़ी समझ में आता है। अब वो चाहे कि आपकी माँ हेमामालिनी जैसी हो, समझ लीजिये।



लेकिन क्या उस हेमामालिनी से वाइब्रेशन्स आते हैं क्या! उसको ले के करेंगे क्या? उसका क्या आचार डालें? कितनी बेवकूफी की बातें लोग करते हैं। उसको सोचना चाहिये कि, सब चीज़ परमात्मा ने बहुत विशेष रूप से बनाई है और उसको बनाने में बहुत कुछ रचना करने में, बहुत चीज़ों का विचार करना पड़ता है। शरीर के अंग-प्रत्यंग, हर एक चीज़ बहुत ही कमाल से बनाया है। और फिर जिनको इस तरह से जब आप अचंभे में डाल देंगे तब उनके लिये आसान होगा कि सहजयोग का सत्य को पाना। अगर सीधे उंगली घी नहीं निकलता तो टेढ़ी उंगली से घी निकालना चाहिये। उनसे यही कहना चाहिये कि भाई हमने तो देखा अपने आँख से इसलिये निर्विवाद है। हमने तो देखा हमारे अन्दर और वाइब्रेशन्स भी आये और हम भी वाइब्रेशन्स दे रहे हैं। हम भी लोगों को ठीक कर रहे हैं, इसमें कोई शक नहीं। अब तुमको विश्वास नहीं होता तो तुम चलो, फोटो पर देखो। तुम अपनी तरफ से पूछो ना 'डंके की चोट पर' अगर बहुत ही बेकार आदमी हो तो दूसरी बात है। पर सर्वसाधारण अगर आदमी सरल हो तो हो जाता है।

सर्वसाधारण आदमी अगर सरल हो और उसका हृदय सच्चा हो और उसने वाकई किसी की तपस्या की हो तो ये काम बिलकुल क्षण में घटित हो जाता है। ये आपने देखा हुआ है। इतना आसान है रिइलाइजेशन देना सहजयोग में। लेकिन इसके लिये जरूरी है कि आपमें वो दृढ़ता आनी चाहिये। आपमें विश्वास पक्के जमने चाहिये। जब तक वो विश्वास आपके अन्दर पक्का नहीं तो फिर आदमी फौरन पहचान लेगा कि ये डामाडौल है महाराज। ये बोल तो रहे हैं लेकिन इसमें अभी उतना कॉन्फिडन्स नहीं है। हमेशा जब आदमी बात करता है और वो ऑथोरिटी से जब बात करता है तो अंदेशा हमेशा रहता है कि लोग आपको ब्रॅण्ड मारेंगे, कि ये तो जैसे हमारे मराठी में कहते हैं कि, 'त्या बाईंच्या नादी लागला' और मराठी में हैं ऐसे-ऐसे शब्द, मराठी में ही नहीं हिन्दी में भी हैं। नहीं तो फिर कहेंगे कि, 'त्यांनी घोळ घातला'। दुनिया में कैसी-कैसी चीजें हैं ब्रॅण्डिंग के लिये। उस तरह से हर एक भाषा में, अंग्रेजी में भी है और हिन्दी में भी है। उनको भूलभूलैय्या में डाल दिया, इंग्लिश में भी है। अरे, उस चक्कर में तुम कहाँ आ गये? सब तरह की चीजें हैं। लेकिन कहना कि भाई, आने की बात क्या है? इन आँखों से हमने कुण्डलिनी को उठते हुए देखा है तो क्या हम भूला दें? हमने कुण्डलिनी का चढ़ना देखा है और हमारे हाथ से वाइब्रेशन्स जा रहे हैं और हमसे लोग पार हो रहे हैं तो सब क्या भूला दें? कैसे भूलायें? ये तो बहुत मुश्किल काम है। पर ये कॉन्फिडन्स जब तक आपके अन्दर पूरी तरह से नहीं होता है तब तक आपका भी असर लोगों पे पड़ने वाला नहीं है। लेकिन हमारे यहाँ ऐसे लोग बहुत हैं। खास कर बम्बई में ऐसे लोग बहुत ज्यादा हैं कि जो बहुत गहराई से इस बात को समझ गये हैं। यही तो मैं बम्बई वालों की विशेषता कहती हूँ कि यहाँ लोग थोड़े जरूर हैं, लेकिन एक-एक आदमी एक-एक से बढ़के हैं, ये विशेषता है बम्बई वालों की। यही दिल्ली में बहुत ज्यादा लोग हैं लेकिन कॉन्फिडन्स से रहने वाले लोग वहाँ इतने ज्यादा नहीं हैं। ये जरासा अन्तर है उसके लिये समझ लीजिए कि हमने मेहनत भी बहुत करी है। अब परमात्मा की कृपा से ऐसे ऐरे-गैरे, नथ्थू खैरे ज्यादा आये नहीं हैं। अगर ऐरे-गैरे, नथ्थू खैरे इसमें आ जाते तो मुश्किल पड़ता। उनको कुछ दूर ही रखा गया है, लेकिन आपको भी इसका थोड़ा अन्दाज रहना चाहिये कि आपके सामने ऐरे-गैरे नथ्थू खैरे तो नहीं बैठे हुए हैं।

आप बेकार के लोगों पे अपना टाइम बरबाद ना करें। माने ये कि, 'हा माझा भाऊ आहे', 'ये मेरा भाई है' लगे उसके पीछे। जब अपने भाई को आप जानते हैं कि वो शराब पीता है, बीवी को मारता है, जुआ खेलता है और हर तरह से इसने अपने को खराब कर के छोड़ा हुआ है। दूसरी बात ये कि इसने तुमको ठगाया है। तुम्हें तकलीफ दी है और दुनिया भर को तकलीफ देता है और झूठा आदमी है। सब सर्वगुणसंपन्न है। तो भी वो तुम्हारा भाई है तो उस पे तुम मेहनत कर रहे हो। तो तुम वाकई में पागल आदमी हो। आपको मेहनत करना चाहिये पहले ऐसे लोगों पर, कि जो आपसे थोड़ा मैल खाये। पहले भी मैंने कहा था कि हमेशा पहले जो सीधे-साधे शब्द हैं उनको ट्राई करिये और उसके बाद में आपको कठिन शब्दों को ट्राई करना चाहिये। पर अधिकतर लोगों का यही हो जाता है कि वो इसमें भी अपनी जो लौकिक रिश्तेदारी है उसको जोड़ते हैं कि, 'मेरा भाई, मेरा बाप, मेरी बीवी', 'मेरी बीवी' तो बहुत

ज़्यादा! उसमें इतनी मुश्किले हो जाती हैं कि समझाते नहीं बनता कि किस तरह से ठीक करें। हालांकि ये बात सही है कि जब तक आपके घरवाले ठीक नहीं होंगे तब तक सहजयोग में उतरना जरा मुश्किल हो जाता है और पूरी फैमिली की फैमिली सहजयोग में आ जाये तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन आज सहजयोगियों के सामने जो प्रश्न खड़ा हुआ है अब वो ये है, उसको भी समझ लेना चाहिये कि आज तुम्हारे सामने कौनसे प्रश्न खड़े हैं। आपके सामने सबसे बड़ा पहला तो प्रश्न ये है कि आप जमे हैं या नहीं? पहले जमना चाहिये। बगैर जमे सहजयोग नहीं चलता। पूरी तरह से सहजयोग में पहले जम जाओ। सहजयोग में जमने के बाद दूसरी चीज़ आपको ये करनी चाहिये कि आपको देखना चाहिये कि हम कितनों को और जमा सकते हैं? ये विचार हमेशा रखना चाहिए। आपका दीप पहले जलाया जाये, वो दीप पूरी तरह से ठीक हो जाए, स्थिर हो जाए उसको ठीक कर लिया जाए। अब इस दीप से आपको कितने दीप जलाने के हैं फिर उसका आप पता लगाते हैं। आप मन में सोचें कि साहब ये आदमी ठीक रहेगा, वो वहाँ था वो ठीक रहेगा। 'पाँचो-पच्चीसों पकड़ो, बुलाओ, एक ही डोर बंधाऊँ।' उसमें आप जानते हैं कि खूबी से काम लेना पड़ता है। अगर आप पहले जाके कह दीजिये कि वहाँ जाकर के 'जय माताजी, माताजी की जय हो' फिर तो हो गये दरवाजे बंद, बाहर खड़े कर के। उसमें खूबी से काम लेना चाहिये और ऐसा करना चाहिये कि जिससे आदमी पहले आपके पास पहुँच जाए। जब वो पहुँच गया, ज़्यादातर तो मैं पहुँचवा ही देती हूँ। क्योंकि कोई बीमार पड़ गया, किसी की बीवी भाग गयी, किसी का कुछ हो गया। इस तरह के प्रकार होते रहते हैं, तो वो सीधा तुम्हारे पास आ जाते हैं। पर बेहरहाल जो भी हो जैसे ही ऐसी कोई घटना घटित हो जाये और आपके पास ऐसा कोई आदमी आ जाये तो बहुत ही अच्छा है।

पर अगर आपको भी किसी आदमी को हथियाना है, तो सबसे बड़ी चीज़ जो कि किसी आदमी पर इम्प्रेसन डालती है वो आपका चरित्र, आपका बोलना, आपका करना-धरना सबकुछ इम्प्रेसन डालती है। हाँ अगर कोई बड़ा ही गया बीता हो तो वो तो उलटी ही चीज़ें देखेगा। आप अगर कुंकू लगा के जाएंगे तो कहेगा, 'कुंकू लगा के आया।' नहीं लगा कर गये तो कहेगा कि, 'लगा के नहीं आया।' ऐसे लोगों की बात मैं नहीं कर रही हूँ जो कि बिल्कुल बेकार हैं। अब ये लोग कभी पार होने भी नहीं वाले, बहुत मुश्किल है इन लोगों को पार कराना। वो चाहे कोई भी हो, चाहे वो अपने को बहुत बड़ा आदमी समझे, छोटा आदमी समझे, ये लोग पार होने ही नहीं वाले। तो उनसे तो झगड़ा लेनी की कोई बात ही नहीं है। पर जो सर्वसाधारण आप सोचते हैं कि जो आदमी इसमें आ सकता है, उससे जब आपको पेश आना है, उससे बातचीत करनी है, उससे कोई भी संबंध करना है तो उस वक्त आप बड़े खूबी से उसको पकड़ें। पहली सबसे बड़ी चीज़ है कि आपका इम्प्रेसन उसपे कैसा पड़ता है, इस पर भी निर्भर रहेगा कि वो आदमी किस लेवल का है। जो आदमी किसी लेवल का होगा वो आपको देखते ही परख जाएगा कि ये आदमी कोई ऊँची किसम की चीज़ है। लेकिन अगर वो उस लेवल का नहीं होगा तो वो आपको पहचान नहीं पाएगा। वो तो आपका शर्ट देखेगा। पैंट देखेगा, कोट देखेगा, ये देखेगा, वो देखेगा, अगर वो जरा भी लेवल का होगा तो..!

मेहतानी की बात बताऊँ। हमारे नागपूर के ही एक साहब थे। वो, उनके घर में सब राधास्वामी के शिष्य थें। वो अकेले ही उनसे सबसे लड़ता रहता था। कहता था कि, 'तुम लोगों में तो कोई अन्तर ही नहीं आया। तुम क्या कर रहे हो इस गुरु-वुरु को लेकर के?' ना उस आदमी में कोई विशेषता हम पाते हैं। लेकिन जब उन्होंने मेहतानी को मिले तो वो कहने लगे कि, 'उनको देखते ही मैं समझ गया कि एक तो ये आदमी भी कुछ अलग है और दूसरी ये बोलते भी बड़े कॉन्फिडन्स से हैं तो उन्होंने कुछ पाया जरूर है। बगैर पाये आदमी ऐसा नहीं होता। ये पाये हुए आदमी हैं।' तब मैंने फौरन अपने घर वालों से कहा कि, 'नहीं भाई, तुम लोग सब बकते हो। उनके जो गुरु असली हैं क्योंकि उन्होंने पाया है। अगर आप लोगों ने पाया हुआ है तो आपके बर्ताव से, आपके बातचीत से, आपके उठने-बैठने के ढंग से हर एक चीज़ को लगना चाहिये, आपके कॉन्फिडन्स की वजह से भी लगना चाहिये कि इन्होंने पाया हुआ है। अगर उनको लगने लग जाये कि आपने पाया हुआ है तो धीरे-धीरे वो भी इस बात को पूछेंगे कि आपने कैसे पाया? कहाँ से पाया? किस तरह से आप इतने शांत रहते हैं? किस तरह से आपका स्वभाव इतना मीठा हो गया और ये जब तक आपके अन्दर ट्रान्सफोर्मेशन नहीं आ जाता, जब तक आपके अन्दर ये मिठास और ये आपके अन्दर बड़प्पन और ये सौंदर्य आपके अन्दर नहीं चमकता, तब तक आप किसी को इम्प्रेस नहीं कर सकते। अर्थात् मैं उन लोगों की बात नहीं कर रही हूँ जो छीछले हैं या जो सुपरफिशियल हैं। पर साधारण, सर्वसाधारण लोग इस चीज़ को पहचान लेते हैं कि ये आदमी में ईश्वरी तत्व है।

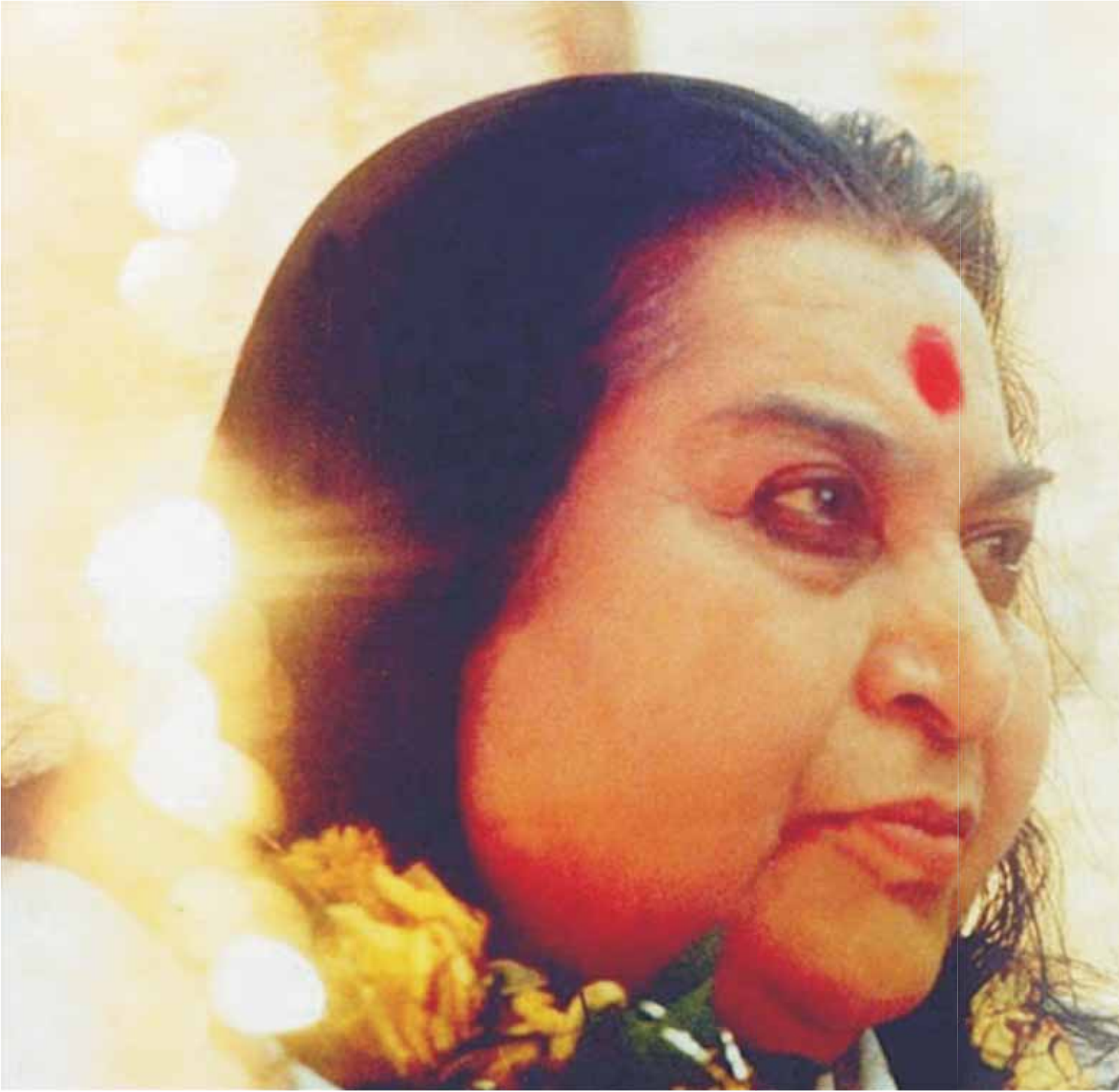
तो सबसे पहले आपको जमना पड़ेगा फिर ऐसे लोगों को पकड़ना पड़ेगा। उनकी पहचान ये है कि वो आपके तौर और तरिके से प्रभावित हो जाएं। अब जैसे बहुत से गुरु लोग हैं जो हाथ में चिमटा लेकर बैठते हैं। अधिकतर जो असल वाले होते हैं वो जो आया उसको चार चिमटे मारते हैं पहले, तो भी वो चिपका रहा तो उसको बोलते हैं कि, 'जा बैठ उधर' उसको बिठाते थे। अब वो दशा तो है नहीं कि आप अगर गुरु हैं तो आपको तो अब लोगों को फँसाना है! जैसे क्राइस्ट ने कहा था कि, 'आओ, मैं तुमको सिखाऊँगा। किस तरह से इन्सान को पकड़ा जाए और तुम मछली पकड़ना छोड़ दो।' उसी प्रकार अब आप लोग सीखिये कि, किस तरह से इन्सान पकड़ना चाहिये और इस भवसागर से बचाना चाहिये। यही हमारे सामने सबसे बड़ा आज प्रश्न है। ये सबसे बड़ा प्रश्न सहजयोगियों के सामने है कि किस प्रकार आपको और लोगों को बचाना चाहिये और वो हर हालत में होना ही पड़ेगा। जितना भी हो सकता है, उसके लिये जो जो मेहनत करनी पड़े, जो-जो आफ़तें उठानी पड़े वो हमको करनी पड़ेगी और हमें लोगों को बचाना पड़ेगा और बहुत से लोगों को हमको सहजयोग में उतारना पड़ेगा। यही आज हमारे सामने प्रश्न है। और इसीको करना चाहिये। ये नहीं कि ये हमारे भाई की नौकरी नहीं लगती, हमारा फलाना काम नहीं होता, ये सब नहीं है।

आज सबसे बड़ा काम ये है कि आप किनारे पे खड़े हैं और उन लोगों की ओर देखिये जो डूब रहे हैं और उनको बचाने की कोशिश करिये। ये सबसे बड़ा प्रश्न हमारे सामने है। अगर इस प्रश्न को हम हल नहीं कर सकते, तो हमारा पाना भी बेकार हो गया और सभी बेकार हो जाता है। आज आप यहाँ पर होली में प्रतिज्ञा करें अपने अन्दर, मन में और ये कहें कि हमारा लक्ष्य एक-एक आदमी को कम से कम



एक-एक हजार आदमियों को बचाना है। कम से कम पूरी मेहनत करके कितने लोगों को आप बचा सकते हैं। उसके लिये कभी-कभी आपको बहुत झुकना भी पड़ेगा। बहुत सी परेशानियाँ भी उठानी पड़ेगी। बहुत सी तकलीफें भी उठानी पड़ेगी। लेकिन सब चीज़ को आप अपने सामने रख के संयत भाव से बहुत सूझ-बूझ से और लोगों को बचाने का प्रयत्न करना है। इसमें चिड़चिड़ाना, गुस्सा होना, नाराज़ होना, अपने पर भी झिलझिलाना, दूसरे पे झिलझिलाना, कोई भी चीज़ में ऐसा सोच लेना कि हमने बहुत कर लिया या ऐसा सोच लेना कि हम कुछ नहीं कर पाते। दोनों एक ही है या दूसरों पे रौब झाड़ना, उनको डाँटना, फटकारना या दूसरों से डरना ये सब चीज़ें छोड़ कर के बड़े संयत भाव से और कॉन्फिडन्स के साथ आपको ये कार्य करना चाहिये कि किस तरह हम ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को बचा सकते हैं। अब जैसे एक राहूरी में हम गये, वहाँ ये कहा गया कि, 'माताजी के पैर मत आओ' क्योंकि मेरे पैर एकदम सूज कर के एकदम वो हो गये थे। तो कहा कि, 'अब माताजी के पैर पर नहीं आने का' तो सबको बुरा लग गया। चलो, मैंने कहा, 'भाई यहाँ आओ।' अब क्या करें? थोड़े और सूज जाएंगे, उतार लेंगे क्योंकि उस बात पर लोगों को नाराज़ कर के कैसे होगा। उसमें भी प्रेम ही था उनका लेकिन उस प्रेम में भी अगर वो समझे कि इससे माँ को तकलीफ होती है तो कोई बात नहीं फिर। पर चलो, कोई बात नहीं। किस तरह से भी मान जाए और इसको पा ले, एक बड़े हो करके। एक बड़े के नाते, एक ऊँचे स्थान पे बैठे हुए आदमी समझ कर के अब ये कार्य को करना चाहिये। ये बड़ी समझदारी की, सूझ-बूझ की और प्रगल्भता की बात है।

ये प्रगल्भता, ये मैच्यूरिटी आपके अन्दर, सबके अन्दर आये और आप परमात्मा के प्रकाश से प्लावित हो और सबको अपना प्रकाश दें। ऐसा, ये मैं आपको आशीर्वाद देती हूँ।



સુષુમ્ના નાડી

श्री महालक्ष्मी

आदिशक्ति की जो तीसरी शक्ति है, त्रिगुणात्मिका वो महालक्ष्मी की शक्ति है। इसी शक्ति से हम धर्म को धारण करते हैं।

आज हम महालक्ष्मी की पूजा करेंगे।इसी तत्व के द्वारा आप उस अवस्था तक पहुँचे हैं। कुण्डलिनी के उत्थान के लिए महालक्ष्मी शक्ति ने आपकी उत्क्रान्ति के मध्यमार्ग का सृजन किया। कोल्हापुर के महालक्ष्मी मन्दिर में लोग हमेशा 'उदे, उदे अम्बे', भजन गाते हैं..... क्योंकि कुण्डलिनी ही 'अम्बा' हैं।

महालक्ष्मी के सम्बन्ध में हमें ये समझना होगा कि वे क्या करती हैं और उनकी सहायता क्या है। महालक्ष्मी वाहिका (सषुम्ना) या महालक्ष्मी की शक्तियों ने हमारे अन्दर आवश्यक सन्तुलन, आवश्यक मार्ग का सृजन किया है ताकि कुण्डलिनी उठ सके। बाएं और दाएं अनुकम्पी को सन्तुलित किया है और कुण्डलिनी के उत्थान के लिए वे ही खुला मार्ग बनाती हैं। यह प्रेम एवं करुणा का मार्ग है करुणा और प्रेम के माध्यम से वे ये मार्ग बनाती हैं क्योंकि वे जानती हैं कि यदि मार्ग खुला न होगा तो कुण्डलिनी न उठ सकेगी। अन्ततः व्यक्ति उस अवस्था तक पहुँच जाता है जहाँ जिज्ञासा का आरम्भ होता है और आप लोगों में जब जिज्ञासा जागृत हुई तो आपका महालक्ष्मी तत्व जागृत हो गया....।

एक अन्य कार्य जो ये महालक्ष्मी तत्व करता है वो ये है कि यह कुण्डलिनी शक्ति को भिन्न चक्रों तक जाने का मार्ग बताता है ताकि इन चक्रों के दोष दूर हो सकें। ये अत्यन्त लचीली शक्ति है जो भिन्न चक्रों में कुण्डलिनी का पथप्रदर्शन करती है और समझती है कि किस चक्र को कुण्डलिनी की सहायता की आवश्यकता है। आपने अवश्य देखा होगा कि किसी भी बाधित चक्र पर जाकर, उसे ठीक करने के लिए ये किस प्रकार धड़कती है। यह सारा कार्य इसलिए होता है क्योंकि वे करुणा एवं प्रेम से परिपूर्ण हैं और चाहती हैं कि आप पूर्ण सत्य को प्राप्त करें।

पूर्वकर्मों के बहुत से बन्धन एवं समस्याएं हमारे उत्थान में कठिनाई उत्पन्न करते हैं। षड्रिपु हमारा अन्तर्परिवर्तन (उत्थान) असम्भव कर देते हैं। परन्तु महालक्ष्मी तत्व के प्रज्ज्वलित और जागृत हो जाने पर मानव में अन्तर्परिवर्तन होता है और वह एक भिन्न तत्व का बन जाता है-आत्मतत्व। प्रकृति के पाश से मुक्त होकर साधक परमेश्वरी लीला का साक्षी एवं अपना स्वामी (गुरु) बन जाता है।

महालक्ष्मी शक्ति जागृत एवं स्थापित होने के पश्चात व्यक्ति बात-बात पर परेशान नहीं होता, प्रेम एवं करुणा का आनन्द उठाता है। साधक को श्री कृष्ण वर्णित 'स्थितप्रज्ञ' स्थिति प्राप्त हो जाती है और उसमें 'सामूहिक चेतना' का एक नया आयाम विकसित हो जाता है। बूँद समुद्र में मिलकर 'पूर्णसमुद्र' - 'परमेश्वरी प्रेम की शक्ति' बन जाती है तथा बहुत से दीप प्रज्ज्वलित करती है।

प.पू.श्री माताजी, १० नवम्बर १९९

सूक्ष्म चक्र
उनमें स्थापित
अन्तर्जात गुण



..... इसी प्रकार से इन चक्रों को शक्ति देने वाले ऐसे ग्रह भी हैं, जैसे मूलाधार पर मंगल, स्वाधिष्ठान पर बुद्ध, नाभि पर गुरु, हृदय पर शुक्र, विशुद्धि पर शनि, आज्ञा पर सूर्य और सहस्रार पर सोम जो कि शिव या देवी का स्थान माना जाता है-आदिशक्ति का। इस प्रकार हमारे नवग्रह इन चक्रों पर वास करते हैं।

प.पू.श्री माताजी, १६.२.१९८५

हमारे उत्थान मार्ग में सात सूक्ष्म ऊर्जा चक्र हैं। कुछ सहायक चक्र भी हैं। हमारी विकास प्रक्रिया के दौरान इन सूक्ष्म चक्रों का सृजन हुआ। शरीर के बाँये हिस्से में ये चक्र हमें भावनात्मक पोषण प्रदान करते हैं और दायें हिस्से पर शारीरिक एवं मानसिक पोषण।

प.पू.श्री माताजी, परा आधुनिक युग

..... ये सात चक्र हमारे अन्दर ऐसे बनाये गये हैं बढ़िया तरीके से, कि जैसे एक के बाद एक माने सीढ़ियाँ हमारे उत्क्रान्ति में बनायी गयीं। जब से हम कार्बन थे, तब से लेकर के धीरे-धीरे हम उठने लग गये, वैसे-वैसे हर उत्क्रान्ति का जो एक ठप्पा हमने हासिल किया, उसके अनुसार जैसे कि एक माइल स्टोन बनाया गया है।

प.पू.श्री माताजी, नई दिल्ली, १५.३.१९८४

..... सूक्ष्म चक्रों की अभिव्यक्ति स्थूल रूप में प्लेक्सेस के रूप में होती है।सब जितने भी चक्र हैं, उनसे चालित प्लेक्सेस हैं। प्लेक्सस के जितने सब प्लेक्सस हैं, उतने ही उस चक्र की पंखुरियाँ होती हैं।

प.पू.श्री माताजी, नई दिल्ली, ३.१.१९७८

चक्रों की संरचना कमाल की है

..... ये सात चक्र हैं - मूलाधार, स्वाधिष्ठान, नाभि, हृदय, विशुद्धि, आज्ञा और सहस्रार। इसके अलावा हमारे अन्दर सूर्य और चन्द्र के चक्र भी हैं। ब्रह्मरन्ध्र को छेदने के बाद भी तीन और चक्र हमारे अन्दर हैं और कार्य करते हैं जिन्हें हम बिन्दु, अर्धबिन्दु और वलय कहते हैं।

..... संगीत में सात सुरों का जो आप खेल देखते हैं, हमारे अन्दर भी ऐसा ही सुन्दर संगीत निर्माण हो सकता है। ये सारे हमारे अन्दर सुर हैं। जैसे 'स' शुरू करे तो सा-रे-गा-मा-पा-धा-नी- (मूलाधार में सा) सहस्रार पर 'नी' जाकर पहुँचता है।

इसकी साज की व्यवस्था इतनी सुन्दर है कि सारे स्वर जाकर अन्त में अपने मस्तिष्क में, मूलाधार चक्र से लेकर सहस्रार तक, सातों के सात जिन्हें हम कहते हैं चक्रों की पीठ-पूरी तरह से अपने कार्य में संलग्न हैं। ये सात चक्र जो हम देखते हैं, इनके पीठ हमारे मस्तिष्क में है। जिसने आपको बनाया, उसका कमाल देखिये-सात स्वर बनाने के बाद, उसके जो पीठ हैं, उसके हर एक स्वर का निनाद इन सात पीठों से बने हुये इस मस्तिष्क में इस तरह घुमाया जाता है, इसकी जो शक्ति है उसको किस तरह से एक सुन्दर ताल बद्ध स्वर में अलापा जाता है, यह एक कमाल की चीज़ है जिसे देखते ही बनता है।

यह सारे चक्र जिन पीठों से संचालित होते हैं, गवर्न होते हैं, वह पीठ हमारे मस्तिष्क में हैं और हमारे मस्तिष्क के ही सेन्ट्रल नर्व के साथ इन सारे चक्रों का चलन-पालन हो सकता था लेकिन होता नहीं है। पैरा सिंपथैटिक नर्वस सिस्टम इन चक्रों को संचालित करते हैं। जब तक हम इस पैरा सिम्पथैटिक नर्वस सिस्टम पर प्रभुत्व न जमा लें, जब तक हमारा सम्बन्ध आटोनॉमस सिस्टम जिसको हम चला नहीं सकते, ऐसे स्वचालित पर अपना जोर न जमा लें तब

तक न हम बदल सकते हैं और न दुनिया बदल सकती है।

इतना ही नहीं इन सातों पीठों का यहाँ मस्तिष्क में सम्मेलन है। यहाँ तीन जो शक्तियाँ हमारे अन्दर प्रवाहित हैं-हमारी इच्छा शक्ति, क्रिया शक्ति और हमारी धर्म शक्ति जिनसे हमारी क्रान्ति का पथ बनता है, जिससे हम रिवोल्यूशनरी प्रोसेस में जाते हैं, यह तीनों ही शक्तियाँ एकत्रित हो जाती है। इस प्रकार इस मस्तिष्क में सात चक्रों और तीन शक्तियों का समन्वय होता है।

चक्रों को छेदने के लिए ही कुण्डलिनी कार्यान्वित होती है। जब कुण्डलिनी इन चक्रों को छेदती हुई ब्रह्मरन्ध्र तक पहुँचती है, उसके उत्थान से हर चक्र पर अनेक गतिविधियाँ हो जाती है।

..... इसी प्रकार से इन चक्रों को शक्ति देने वाले ऐसे ग्रह भी हैं, जैसे मूलाधार पर मंगल, स्वाधिष्ठान पर बुध, नाभि पर गुरु, हृदय पर शुक्र, विशुद्धि पर शनि, आज्ञा पर सूर्य और सहस्रार पर सोम जो कि शिव या देवी का स्थान माना जाता है-आदिशक्ति का। इस प्रकार हमारे नवग्रह इन चक्रों पर वास करते हैं।

प.पू.श्री माताजी, १६.२.१९८५

..... सभी चक्रों में कोई न कोई तत्व विद्यमान होता है, जैसे पृथ्वी तत्व (मूलाधार), वायु तत्व (अनहद), जल तत्व (स्वाधिष्ठान), अग्नि तत्व (नाभि), आकाश तत्व (विशुद्धि) आप यहाँ आज्ञा पर पहुँचते हैं तो यह प्रकाश तत्व है, यह प्रकाश है।

चैतन्य लहरी, जुलाई-अगस्त २००७ से

..... जो ये सातों चक्र हैं आपके अन्दर, ये ही वो मानवता के अनेक रंग हैं जिनको पिरोती हुई कुण्डलिनी अन्दर से जाती है। इसलिये वह सबको समग्र करती है, इंटीग्रेट करती है। जब कुण्डलिनी इन सबसे गुजरती है तो इन सब तत्वों पर चलती हुई तत्व को समग्र करती हुई आपके आत्म तत्व पर पहुँचती है और तब आत्मा का जो प्रकाश है इन चक्रों में गुजरता हुआ जाता है और मनुष्य समझ लेता है कि कौनसी चीज़ ठीक है और कौनसी गलत है। गर आप कोई गलत काम करना चाहेंगे तो आप नहीं कर सकते।

..... उसकी वजह है कि आपके अन्दर एक नयी चेतना आ जाती है, जिसे आप चैतन्यमय चेतना कहें।

प.पू.श्री माताजी, ३०.१.१९७८



अलग-अलग देवता इन चक्रों को नियंत्रित करते हैं

सारे देवता एक ही परमात्मा के विभिन्न पहलु हैं। वे भीतरी तंत्र के किसी विशेष तत्व, चक्र अथवा नाड़ी पर नियंत्रण करते हैं। वे चिरकाल जीवन्त हैं और सहजयोग के महानतम कार्य में सहायता के लिए सदैव क्रियाशील रहते हैं। मंत्रों की कला में प्रवीणता प्राप्त कर और विशेषकर हृदय में श्रद्धा भाव को जाग्रत कर सहजयोगी परमात्मा के इन सब पहलुओं में स्थित हो सकता है। अंत में दैवी गुण प्रस्फुटित होते हैं, विकसित होते हैं और चक्रों में प्रगट होते हैं।

निर्मला योग, सितम्बर-अक्टूबर १९८३ में प्रकाशित प्रवचन

..... सभी चक्रों पर उनके शासक देवता विद्यमान हैं। निराकार होते हुए भी उन्हें साकार रूप दिया जाता है। जब आप पूजा-ध्यान करते हैं तो उनका साकार रूप परिवर्तित होकर चैतन्य लहरियों के रूप में प्रवाहित होने लगता है और इस प्रकार से सभी गलत धारणायें, मान्यतायें जिन्होंने आत्मा को ढका हुआ था, दूर हो जाती है (अन्तर्जात गुण जाग्रत हो जाते हैं)

प.पू.श्री माताजी, १८.६.१९८३

२०१
६
४
०

२०१





..... द्वितीय चक्र स्वाधिष्ठान चक्र है। इसकी छः पंखुरियाँ हैं। शारीरिक स्तर पर यह महाधमनी के कार्य को देखता है और यही चक्र हमें रचनात्मक शक्ति, विचारशीलता तथा भविष्यवादी बनने की शक्ति देता है।

सहजयोग पुस्तक

..... जिस चक्र के कारण सारी सृष्टि की निर्मिति हुई, आकाश के ग्रह, सारे तारे जिस चक्र के कारण इस संसार में आए उस चक्र का स्थान हमारे भी पेट के अन्दर में है। ये चक्र नाभि चक्र से निकल कर उसके चारो तरफ होकर हरेक ऐंगल में चलता है, आगे-पीछे हो सकता है, जैसे कमल की डंठल होती है, उसी तरह वो लचीला होता है।

..... इस चक्र के ऊपर श्री ब्रह्मदेव का स्थान है और उनकी पत्नी; पत्नी तो नहीं कहना चाहिये, क्योंकि वे कुमारिका ही रहती हैं सदा, उनकी सहचरी जो हैं वो सरस्वती हैं, या युं कहना चाहिये कि उनकी शक्ति जो हैं वो सरस्वती हैं।

..... इस चक्र का मुख्य कार्य यह होता है कि पेट में जो मेद है, जो फैट है उसको मेंदू माने ...जिसे आप ब्रेन कहते हैं, उस ब्रेन के सेल का replacement करना। यहाँ का जो फैट है उसको evolve करके उसकी उत्क्रान्ति करके इस योग्य करना कि वह अपने ब्रेन का सेल बन जाए। जब हम बहुत विचार करते हैं, जब हम बहुत प्लानिंग करते हैं, जब हम बहुत सोचते हैं, जब हम रजोगुण का इस्तेमाल करते हैं, तब ये कार्य बहुत वेग से होता है, इसमें गति आ जाती है।जब इसकी गति बहुत ज़्यादा जरूरत से ज़्यादा बढ़ जाती है तब इस चक्र के दूसरे जो कार्य हैं जिसे हम कह सकते हैं, हमारा लिवर, हमारा स्प्लीन, हमारा पैनक्रियाज, हमारी किडनी, हमारा यूटेरस - इन सब चीज़ों को यह चक्र देखता है तो उसमें कमी आ जाती है और कभी-कभी रूकावट सी आ जाती है।

..... इसलिये जो लोग दिमागी कार्य ज़्यादा करते हैं उन्हीं को डायबेटीज़ की बीमारी होती है, उन्हीं को हार्ट अटैक आता है क्योंकि राइट साइड बहुत चलाने से लेफ्ट साइड जो है वो उसको बैलेंस देने की कोशिश करता है।

..... आदमी जब बहुत कार्य करता है तो उसका हार्ट नहीं पकड़ना चाहिये क्योंकि हार्ट तो इमोशनल चीज़ है, हार्ट तो इमोशन से चलता है, लेकिन बैलेंस के लिये हार्ट अटैक आ जाता है और आपका शरीर आपको इशारा देता है कि देखो बेटे अब काम जरा धीरे करो, फिर बिस्तर पर लेट जाता है आदमी।

..... इसी असंतुलन के कारण आपका जो पैनक्रियाज है उसकी वर्किंग खत्म हो जाती है, आपकी किडनी की वर्किंग भी खत्म हो जाती है इसी वजह से किडनी ट्रबल हो जाती है, यूटेरस में इतनी परेशानी हो

जाती है, ऐसी औरतों को बच्चे नहीं हो सकते।

..... जब मनुष्य विचार को अत्यन्त जोर से गतिवेग से करता है तो उसके ब्रेन में भी एक तरह का मोमेन्टम बन जाता है, माने फिर वह इसे रोक नहीं पाता और वो इस कदर बेतहाशा पागल की तरह से सोचने लग जाता है।ये रजोगुण (अतिकर्मी) अंतिम extreme पर पहुँच गया तो लोग अब डूग लेने लग गए। वैसे भी रजोगुणी शराब पीते हैं अधिकतर। रजोगुणी इसलिये शराब पीते हैं कि उनको लगता है कि इससे कुछ balance आता है। यह पलायन है। मस्तिष्क की जो अतिक्रिया है उससे बचने के लिए, पलायन के लिये ये लोग शराब पीते हैं, पर इसका वो इलाज नहीं है। इससे तो फिर आप तमोगुण में आ गये और जितने अति से आप दूसरी अति में पहुँच जाइये फिर उतनी ही अति से आप उस अति पर पेन्डुलम के जैसे दौड़ते रहिये। एक अतिशयता यदि आपने ले ली तो आप दूसरे अतिशयता पर पहुँचते हैं। इस उधेड़ बुन में, इसी दौड़-धूप में आदमी collapse हो जाता है।

प.पू.श्री माताजी, ३०.१.१९७८

..... भविष्यवादी लोग जो आक्रामक रूप से प्रचंड व्यवहार करते हैं और जिन पर लोग आघात करते हैं, बहुत से रोग हो सकते हैं, जैसे जिगर की समस्या, जटिल कब्ज़, अस्थमा, हृदयाघात, पक्षाघात, शक्कर रोग, रक्त कैंसर, गुर्दा रोग आदि।

..... प्रचण्ड व्यवहार के कारण उत्पन्न हुई दाईं या सहनशीलता से उत्पन्न हुई बाईं ओर के सभी रोग कुण्डलिनी द्वारा ठीक हो सकते हैं क्योंकि जब इसकी जाग्रति होती है तो वह मध्य की ओर चित्त को खींचती है और व्यक्ति प्रचंडता तथा ग्लानि को छोड़कर अत्यन्त संतुलित व्यक्ति हो जाता है।

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक युग

..... बाईं ओर की समस्या का आरम्भ बाईं स्वाधिष्ठान से होता है, क्योंकि यह पहला चक्र है जो हमारे अन्दर नकारात्मकता प्रवाहित करने लगता है।जब बायां स्वाधिष्ठान पकड़ता है तो आप उन लोगों के पास जाना शुरू कर देते हैं जो ऐसी चीज़ों का वचन आपको देते हैं, 'मैं आपको यह दूँगा, मैं आपको वह दूँगा, ऐसा हो जाएगा, आपके साथ वैसा घटित हो जाएगा।' पर आपकी अपनी ही गलत इच्छाओं के कारण आपमें यह बाईं ओर की पकड़ आ सकती हैसभी भौतिक चीज़ों को देखने का सर्वोत्तम उपाय है कि इनमें बहुत अधिक न उलझा जाए।

प.पू.श्रीमाताजी, ११.३.१९८१

अन्तर्जात गुण

१. सृजनात्मकता - हमें अपनी बहुत बड़ी शक्ति जान लेनी चाहिये, वो शक्ति है जिसे हम सृजन शक्ति कहते हैं। ये सृजन शक्ति श्री सरस्वती का आशीर्वाद है, जिनके द्वारा अनेक कलायें उत्पन्न हुईं। कला का प्रादुर्भाव श्री सरस्वती के आशीर्वाद से ही है।आत्मसाक्षात्कारी जो भी सृजन करता है उसमें अनन्त की शक्ति समाहित होती है, अनन्त तक उसकी सौन्दर्य शक्ति प्रदर्शित होती रहती है।

प.पू.श्रीमाताजी, यमुनानगर, ४.४.१९९२

..... ये गुण आपके अन्दर ही छिपी हुई एक शक्ति है, उसने जब आपको छू लिया तो आप सहज में ही सृजन करने लगे।सृजन शक्ति से आप अनेक विधि काम करने लगते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, दिल्ली, २२.३.१९९३

..... महान सृजनात्मक कार्य जो सहजयोगी कर सकता है वह है सहजयोगी बनाना। सुगमतम और आनन्ददायी कार्य है अन्य लोगों को सहजयोगी बनाना और उन्हें वो दैवी आशीर्वाद देना जिसे वे जन्मजन्मांतर से खोज रहे थे।

प.पू.श्रीमाताजी, २०.८.२०००

२. धार्मिकता - आपके धर्म आपमें रचित हैं, सुप्त रूप में ये आपमें हैं। मानव के लिये मर्यादाओं के रूप में धर्म के दस तत्व हैं (धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, पवित्रता, संयम, धी (बुद्धि), विद्या, सत्य एवं अक्रोध-मनु स्मृति से) जो दस धर्मादेशों की तरह हैं। इन धर्मादेशों का जब पतन हो जाता है तो मानव अत्यन्त भ्रमित या आक्रामक हो उठता है।

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक युग

हमारा धर्म हमारे पेट में होता है, यहाँ पर स्वाधिष्ठान चक्र कार्य करता है। जिस वक्त स्वाधिष्ठान खराब हो जाता है हमारा धर्म भी खराब हो जाता है, लेकिन जब कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है तो वह उन सेल्स में धर्म भर देती है।सहजयोगी ईमानदार बन जाता है, वो अत्यन्त मोहब्बती बन जाता है, उसमें एक तरह का सौष्ठव आ जाता है।

प.पू.श्रीमाताजी, नई दिल्ली, २६.३.१९८५

३. आत्मसम्मान - स्वाधिष्ठान चक्र आपकी गुरु शक्ति को प्रबल बनाता है।जिस समय यह गुरु शक्ति आपमें जागती है तब ये जो बूढ़ापन, वृद्धत्व आता है, उसमें तेजस्विता जाग्रत हो जाती

हैवह व्यक्ति अपने सम्मान के साथ खड़ा रहता है।

प.पू.श्रीमाताजी, मुम्बई, २९.११.१९८४

..... स्वाधिष्ठान के नियंत्रक देवता श्री ब्रह्म देव ने केवल एक बार अवतार लिया, वह था हज़रत अली के रूप में।

..... हज़रत अली का नाम लिये बिना आपका स्वाधिष्ठान चक्र ठीक नहीं हो सकता।

प.पू.श्रीमाताजी, मुम्बई, ३१.३.१९७७

..... जब आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते हैं, तो आपका चित्त आत्मा के प्रकाश से ज्योतिर्मय हो उठता है और स्वतः ही आप अपनी विनाशकारी आदतों, विचारों तथा गतिविधियों को त्यागने लगते हैं। अचानक आप सृजनात्मक हो जाते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, २२.३.२०००

स्वाधिष्ठान चक्र के नियंत्रक देवता श्री ब्रह्मदेव सरस्वती की विशिष्ट भूमिका-

आप जानते हैं मनुष्य पाँच एलिमेंट्स से बना है। ये तत्व ही ब्रह्मा जी के आयुध हैं और ये माँ ने ही प्रजापति (ब्रह्मा) को दिये हैं। माँ के देखने से ही प्रकाश हुआ था। इसलिये तेज को जो तन्मात्रा है या जो एलिमेंट है वो तैयार हुआ, या जो essence of element कहिये, तन्मात्रा का मतलब। माँ ने जब खुशबू ली उसी सुगन्ध से ये पृथ्वी बनी, इसी तरह से पृथ्वी तत्व तैयार हुआ। माँ के बोलने से साऊन्ड का तत्व तैयार हुआ है, इसे नाद कहिये। इस प्रकार तन्मात्रायें जो हैं वो तैयार हुईं और इन तन्मात्राओं से फिर तत्व तैयार हुए हैं। यह सब प्रजापति यानी ब्रह्मदेव का कार्य है।

श्री ब्रह्मदेव इसलिये नहीं पूजे जाते, इसका कारण यह है कि वे संसार के सारे कार्य करें। आपका जो शरीर है, आपका तत्वों का काम है वो कह रहे हैं, उसके लिये उनको पूजने की जरूरत नहीं है, अपनी जगह बैठे वे कार्य कर रहे हैं।प्रजापति का यज्ञ करना जरूरी है जिससे की आपके अन्दर जो पंचमहाभूत हैं, जो आपके अन्दर तत्व हैंवो जाग्रत होकर के आपको भी आपके यश प्रदान करें।

प.पू.श्रीमाताजी, मुम्बई, २.३.१९७६

..... जिस वक्त भी मनुष्य सृजन को करता है तब उसके अन्दर जो ब्रह्म देव हैं जो कि रचयिता है जो स्वाधिष्ठान चक्र पर अधिष्ठित हैं, वे जब जागरूक हो जाते हैं तब ऐसा आदमी अद्भुत रचना करता है।

प.पू.श्रीमाताजी, १६.२.१९८५

..... महासरस्वती शक्ति आपको शिक्षित करती है, मान की अन्य धारणायें देती है।
....महासरस्वती शक्ति से हमारी बुद्धि में अनेक तरह के कलात्मक और विचारक प्रकाश आते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, कबैला, १७.१०.१९९९

..... सरस्वती का कार्यक्षेत्र शरीर का दायां भाग है। स्वाधिष्ठान पर कार्य करके जब ये बाईं ओर को जाती हैं तो कला-विवेक बढ़ता है।व्यक्ति को सरस्वती तत्व से महासरस्वती तत्व की ओर जाना चाहिये क्योंकि सरस्वती तत्व यदि बीज है तो महासरस्वती तत्व पेड़ है।

प.पू.श्रीमाताजी, कलकत्ता, ३.२.१९९२

१. श्री ब्रह्मदेव सरस्वती

श्री सरस्वती का कार्यक्षेत्र शरीर का दायां भाग है। स्वाधिष्ठान पर कार्य करके जब ये बायीं ओर को जाती हैं तो कला-विवेक बढ़ता है।कला परमात्मा की ज्योति है। आप इसे न देख सकें पर इसमें चैतन्य लहरियाँ हैं। सुन्दरतापूर्वक रचित तथा विश्व भर में मान्य सभी कुछ सौन्दर्य की दृष्टि से उत्तम है। यदि आप अपने हाथ इसकी ओर फैलायें तो आपको इसमें से लहरियाँ निकलती हुई महसूस होंगी, विशेषकर यदि इस कला की रचना किसी साक्षात्कारी व्यक्ति ने की हो।परन्तु हमने स्वाधिष्ठान का एक ही भाग विकसित किया है, दूसरे भाग को हमने अनदेखा कर दिया है। स्वाधिष्ठान का उपयोग हम केवल पढ़ने-लिखने के क्षेत्र में ही करते हैं और इस क्षेत्र में हमने उन्नति की है।

पर इससे आगे भी एक अवस्था है जिसके विषय में हम सोचते ही नहीं, और इसी कारण यह असन्तुलन है। आप देखते हैं कि कला-साहित्य आदि बहुत है फिर भी लोग कहते हैं कि सरस्वती और लक्ष्मी का संगम नहीं है। गहनता में जाने पर हम इस असन्तुलन का कारण जानना चाहते हैं। सहजयोग में सरस्वती और लक्ष्मी आज्ञा चक्र पर मिलती हैं। आप (कलाकार) कार्य करते रहते हैं पर आपको इच्छा के अनुसार फल नहीं मिलता। आज्ञा पर आकर आप जान पाते हैं कि आपको वह अवस्था क्यों नहीं प्राप्त हुई जो बहुत से कलाकारों को प्राप्त हुई। हम गरीबी में क्यों रह रहे हैं? दोनों तत्वों को उचित दृष्टि से देखे बिना हम उन्नति नहीं कर सकते। कला (सरस्वती) को लक्ष्मी से जोड़ने के लिए हममें शुद्ध दृष्टि होनी चाहिए।

जिद्दीपना हमारी (कलाकार की) सबसे बड़ी कमजोरी है। इन्होंने यदि एक हाथी बनाया है तो हाथी ही बनाते चले जायेंगे। किसी एक विशेष तरह से यदि वे गाते हैं तो वैसे ही गाते चले जायेंगे। इसमें परिवर्तन करने के लिए कहें तो वे नाराज़ हो जायेंगे। आज्ञा चक्र पर यदि आप विचार करें तो आपको पता चलेगा कि जिद्दीपना आपको आज्ञा से ऊपर नहीं जाने देता।मैं नहीं कहती कि आप कला को बिगाड़ें, पर आप सन्तुलित ढंग से तो कला को देखिए। मैं आपको व्यवहारिकता की बात बताती हूँ कि हममें एक प्रकार का आलस्य है जो हमें जिद्दी बनाता है। कोई नई बात सीखने में हमारे मस्तिष्क थोड़े से शिथिल हैं। इसी शिथिलता के कारण हम कुछ भी ऐसा नहीं सीख पाते हैं जिससे हम लक्ष्मी से जुड़ सकें।अतः सूझबूझ होनी चाहिए तभी मस्तिष्क खुलेगा। जिद्दीपने का कुप्रभाव व्यक्ति के पूरे जीवन पर पड़ता है। सहज में आने पर परिवर्तन आता है। तब सहज ही मैं हम लक्ष्मी से जुड़ जाते हैं। आज्ञा चक्र को ठीक करने के लिए आवश्यक है कि हम अपने अहं को ठीक करें। हिन्दु, मुसलमान, ईसाई या ब्रह्मसमाजी होने की भावना आधारहीन है। मानव मात्र के अतिरिक्त आप कुछ भी नहीं।

.....सत्य सार यह है कि हम सब एक हैं, एक विराट, एक पूर्णता। इसके विपरीत जाने से आप अकेले पड़ जाते हैं तथा सामूहिकता से अलग हो जाते हैं। यह ठीक है कि पेड़ का एक पत्ता दूसरे पत्ते जैसा नहीं होता फिर भी वे होते तो एक ही पेड़ पर हैं। वे सभी एक विराट के अंग-प्रत्यंग हैं। जब हम एक दूसरे से अलग हो जाते हैं तो हमारा सरस्वती तत्व महासरस्वती तत्व नहीं बन पाता। महासरस्वती तत्व में जब आप रहने लगते हैं तो देख सकते हैं कि आप विराट हैं। ऐसी स्थिति में जब कलाकार कोई सृजन करता है तो लोग इसे हृदय से स्वीकार करते हैं।

कला का जो भी कार्य हम करते हैं वह परमात्मा को समर्पित होना चाहिए। इस भाव से की गई सभी रचनाएं शाश्वत होंगी। परमात्मा को समर्पित सभी कविताएं, संगीत और कला कृतियां आज भी जीवित हैं। आज का फिल्म संगीत आता है और समाप्त हो जाता है परन्तु कबीर और ज्ञानेश्वर जी के भजन शाश्वत हैं। अपने आत्मसाक्षात्कार द्वारा उन्होंने महासरस्वती शक्ति से प्राप्त किया और फिर जो भी रचना उन्होंने की वह बेजोड़ थी। इन रचनाओं ने विश्व को एक सूत्र में बांधा।

तो व्यक्ति को सरस्वती तत्व से महासरस्वती तत्व की ओर जाना चाहिए क्योंकि सरस्वती तत्व यदि बीज हैं तो महासरस्वती तत्व पेड़ है। बिना इस बीज को वृक्ष बनाए आप महालक्ष्मी से नहीं जुड़ सकते। आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति भी महालक्ष्मी का वरदान है। महासरस्वती, महाकाली तथा महालक्ष्मी तीनों शक्तियां आज्ञा पर मिलती हैं। वहाँ पर सूक्ष्म रूप में अहं भी है। अतः व्यक्ति को अन्तर्दर्शन कर देखना चाहिए कि सीमित स्तर पर रहते हुए मैं कैसे

पूरे विश्व को प्रकाशित कर सकता हूँ। मैंने बहुत बार कहा है कि अपने अन्दर झाँकिए।

बहुत से लोग देवी की तरह मुझे पूजते हैं। पर इसका मुझे क्या लाभ है, मैं तो जो हूँ वो हूँ। मेरे प्रति श्रद्धा से आप ही को लाभ होता है। आप सहजयोग में आएँ और सरस्वतीतत्व से महासरस्वती तत्व को प्राप्त किया। मुझ में विश्वास करने मात्र से ही आपको सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। आपको स्वयं में विश्वास करना होगा तथा अपना उत्थान करना होगा।

महासरस्वती में व्यक्ति समर्थ और चुस्त होता है। महाकाली में आप इच्छा करते हैं तथा आत्मसात करते हैं। इन इच्छाओं को कार्यान्वित करना महासरस्वती का कार्य है। कुछ लोग चाहते हैं कि सहजयोग फैले। पर इस दिशा में आपने क्या कार्य किया? आपने कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया? कितने लोगों से सहजयोग की बात की?अपनी इच्छाओं को कार्यान्वित कीजिए। कार्य शुरू होते ही इच्छाएं समाप्त हो जाएंगी। जो पूरी हो सकें ऐसी इच्छाएं आपको करनी चाहिए क्योंकि असम्भव इच्छाएं करना भयंकर है।यह (सरस्वती) पूजा पूरे भारत के लिए है क्योंकि आलस्य का रोग पूरे देश में है। हम बिल्कुल भी चुस्त नहीं हैं। हमारी इच्छाएं तो बहुत दृढ़ हैं पर उनकी पूर्ति के लिए हम कुछ भी नहीं करते। एकत्रित होकर सोचिए कि सहजयोग फैलाने के लिए आप क्या कर सकते हैं।

प.पू.श्री माताजी, कोलकाता, ३.२.१९९२

.....हमें सरस्वती की भी आराधना करनी चाहिए। सरस्वती का कार्य बड़ा महान है। महासरस्वती ने पहले सारा अंतरिक्ष बनाया। इसमें पृथ्वीतत्व विशेष है। पृथ्वीतत्व को इस तरह से सूर्य और चन्द्रमा के बीच में लाकर खड़ा कर दिया कि वहाँ पर कोई सी भी जीवन्त क्रिया आसानी से हो सकती है। इस जीवन्त क्रिया से धीरे-धीरे मनुष्य भी उत्पन्न हुआ। परन्तु हमें अपनी बहुत बड़ी शक्ति को जान लेना चाहिए। वो शक्ति है जिसे हम सृजन शक्ति कहते हैं, क्रिएटिविटी (Creativity) कहते हैं। यह सृजन शक्ति सरस्वती का आशीर्वाद है जिसके द्वारा अनेक कलाएं उत्पन्न हुईं। कला का प्रादुर्भाव सरस्वती के ही आशीर्वाद से है।हमारे बच्चे स्कूलों में विद्यार्जन कर रहे हैं। पर हमें ध्यान रखना चाहिए कि बिना आत्मा को प्राप्त किए हम जो भी विद्या पा रहे हैं वो सारी अविद्या है। बिना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किए आप चाहे साइंस पढ़ें या अर्थशास्त्र, उसे न तो आप पूरी तरह समझ सकते हैं और न ही उसको अपनी सृजन शक्ति में ला सकते हैं।

बच्चे दो प्रकार के होते हैं एक तो पढ़ने के शौकीन होते हैं और दूसरे जिन्हें पढ़ने का शौक नहीं होता। कुछ बच्चों के पास कम बुद्धि होती है और कुछ के पास अधिक। बुद्धि भी सरस्वती की देन है लेकिन आत्मा से मनुष्य में सुबुद्धि आ जाती है। बुद्धि से पाया हुआ ज्ञान जब तक आप सुबुद्धि पर नहीं तोलिया तो वह ज्ञान हानिकारक हो जाता है।.....आत्मसाक्षात्कार को पाकर जो विद्यार्जन होता है उसमें बराबर



नीर-क्षीर विवेक आ जाता है। वे समझ लेते हैं कि कौन सी चीज़ अच्छी है और कौन सी बुरी है। कौन सी चीज़ सीखनी चाहिए और कौन सी चीज़ नहीं सीखनी चाहिए। उससे पहले कोई मर्यादाएं नहीं होती। मनुष्य किसी भी रास्ते पर जा सकता है और किसी भी ओर मुड़ सकता है और कोई भी बुरे काम कर सकता है।इन सब चीज़ों का इलाज एक ही तरीके से हो सकता है कि इनके अंदर आप आत्मा का साक्षात्कार करें। आत्मा का साक्षात्कार मिलने से ही सरस्वती की भी चमक आपकी बुद्धि में आ जाती है और जो बच्चे पढ़ने लिखने में कमजोर होते हैं वो भी बहुत अच्छा कार्य करने लग जाते हैं। इसके बाद कला की उत्पत्ति होती है। अगर आप कला को बगैर आत्मसाक्षात्कार के ही अपनाना चाहें तो वह कला अधूरी रह जाती है या वो बेमर्यादा कहीं ऐसी जगह टकराते हैं कि जहाँ उसकी कला का नामोनिशान नहीं रह जाता। तो पहले आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करके ही सरस्वती का पूजन करना एक बड़ी शुभ बात है।

.....आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति की कला अनन्त की शक्ति से प्लावित होती है। तो आप लोग भी आत्मसाक्षात्कारी हो गए हैं। कलात्मक चीज़ हठात आपको निर्विचारिता में उतारेगी और उसका सौन्दर्य देखते ही आपको ऐसा लगेगा कि आप निर्विचार हैं क्योंकि सौन्दर्य देखने से ही चैतन्य एकदम बहने लगता है और उस सौन्दर्य के कारण ही एकदम से आप निर्विचार हो जाते हैं। इसलिए आदिशंकराचार्य ने इसे 'सौन्दर्य लहरी' कहा।

.....कला जब पैसे पर उतर आती है तब उसकी आत्मा ही खत्म हो जाती है। कला

आनंदमयी होनी चाहिए न कि उससे कितना पैसा मिले।शान्तिमय, ध्यानावस्था में रहे बिना कला सृजन अधूरा रह जाता है या मर्यादा विहीन। आपको कला का तंत्र तथा तकनीक मालूम होनी चाहिए। जब आपको आत्मसाक्षात्कार होता है तभी आपकी सृजन कला बढ़ जाती है।

प.पू.श्री माताजी, यमुनानगर, ४.४.१९९२

सरस्वती जी का एक गुण ये है कि वे सूक्ष्म चीजों में प्रवेश कर जाती हैं, जैसे पृथ्वी माँ सुगन्ध में परिवर्तित हो जाती हैं। इसी प्रकार से संगीत, लय में परिवर्तित हो जाता है और जिस भी चीज़ का वे सृजन करती हैं वह और अधिक महान हो जाती है, जिस भी पदार्थ को वे उत्पन्न करती हैं वह सौन्दर्य सम्पन्न हो जाता है।

प.पू.श्री माताजी, धुलिया, १४.०१.१९८३

२. श्री ब्रह्मदेव

ब्रह्मदेव स्वाधिष्ठान चक्र पर बैठे हैं और वे इसे शक्ति देते हैं। तो इनका पहला कार्य है कि सृजन कार्य के लिए जो शक्ति चाहिए उसे देते हैं।

प.पू.श्री माताजी, निर्मला योग, जुलाई-अगस्त, १९८५

“ब्रह्मदेव जो हैं.....उन्होंने क्रिया करके सारी सृष्टि रची, सुन्दरता से सब कुछ बनाया। पाँच महाभूतों, पंच महाभूतों को लेकर उन्होंने सारी सृष्टि रची।”

प.पू.श्री माताजी, निर्मला योग, दिल्ली, १७.०२.१९८१

अब चित्त जो है, ब्रह्मदेव की देन है।

प.पू.श्री माताजी, पूना, २३-०२-१९९०

हज़रत अली इस पृथ्वी पर अवतरित हुए, वे ब्रह्मदेव के अवतरण थे।

प.पू.श्री माताजी, १४-०८-१९८८



..... में आपके साथ हर कदम पर, हर जगह पर हूँ। हर जगह, आप जहाँ भी जाओगे। व्यक्तिगत रूप से, मन से, हर तरह से हर जगह में आपके साथ हूँ। आप जब भी मुझे याद करोगे... मुझे अपनी सारी शक्तियों के साथ अपने पास पाओगे यह मेरा वादा है।

प.पू.श्रीमाताजी, २७.९.१९७६

♦ प्रकाशक ♦

निर्मल ट्रेन्सफोर्मेशन प्रा. लि.

प्लॉट नं.८, चंद्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी, पौड रोड, कोथरुड, पुणे - ४११ ०३८. फोन : ०२०- २५२८६५३७, २५२८६७२०, e-mail : sale@nitl.co.in



गुड़िपाडवा-इस दिन को शालिवाहनों का नववर्ष कहा जाता है। यह शाल (जो गुड़ी के ऊपर लगाया जाता है) आपकी माताजी का आवरण है और उन्हें गरमाहट (warmth) प्रदान करती है और शालिनता से ढकती है। यह शाल ऐश्वर्य, विनम्रता, पवित्रता का प्रतिक है। आप अपनी माँ के आधार पर उनके अनुयायी बन कर खड़े हो जाईये। आप गणेशजी की तरह इसकी रक्षा करें।

